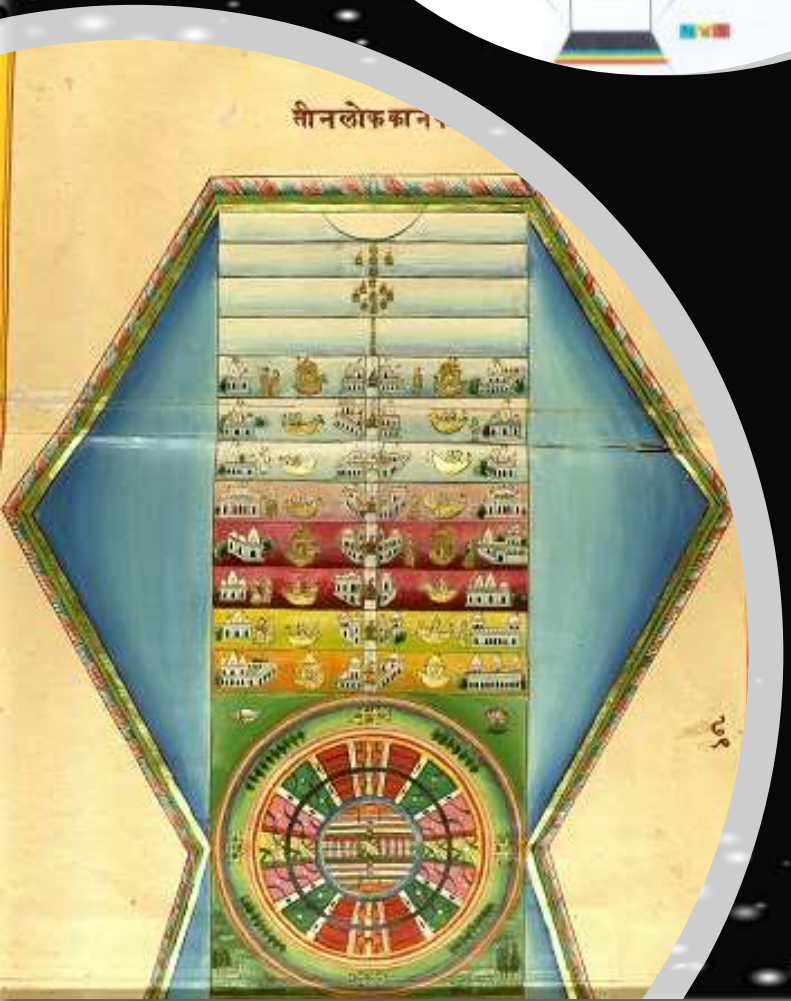

तत्त्वार्थसूत्र अध्याय 4

Presentation Developed By :

श्रीमति सारिका छाबडा

www.JainKosh.org

ऊर्ध्वलोक

लम्बाई	• 7 राजु
ऊचाई	• 7 राजु (1 लाख 40 योजन कम)
चौड़ाई	• 3 राजु (5+1)/2 = 3
स्थिति	• मेरू की चूलिका से ऊपर
आकार	• मृदंग

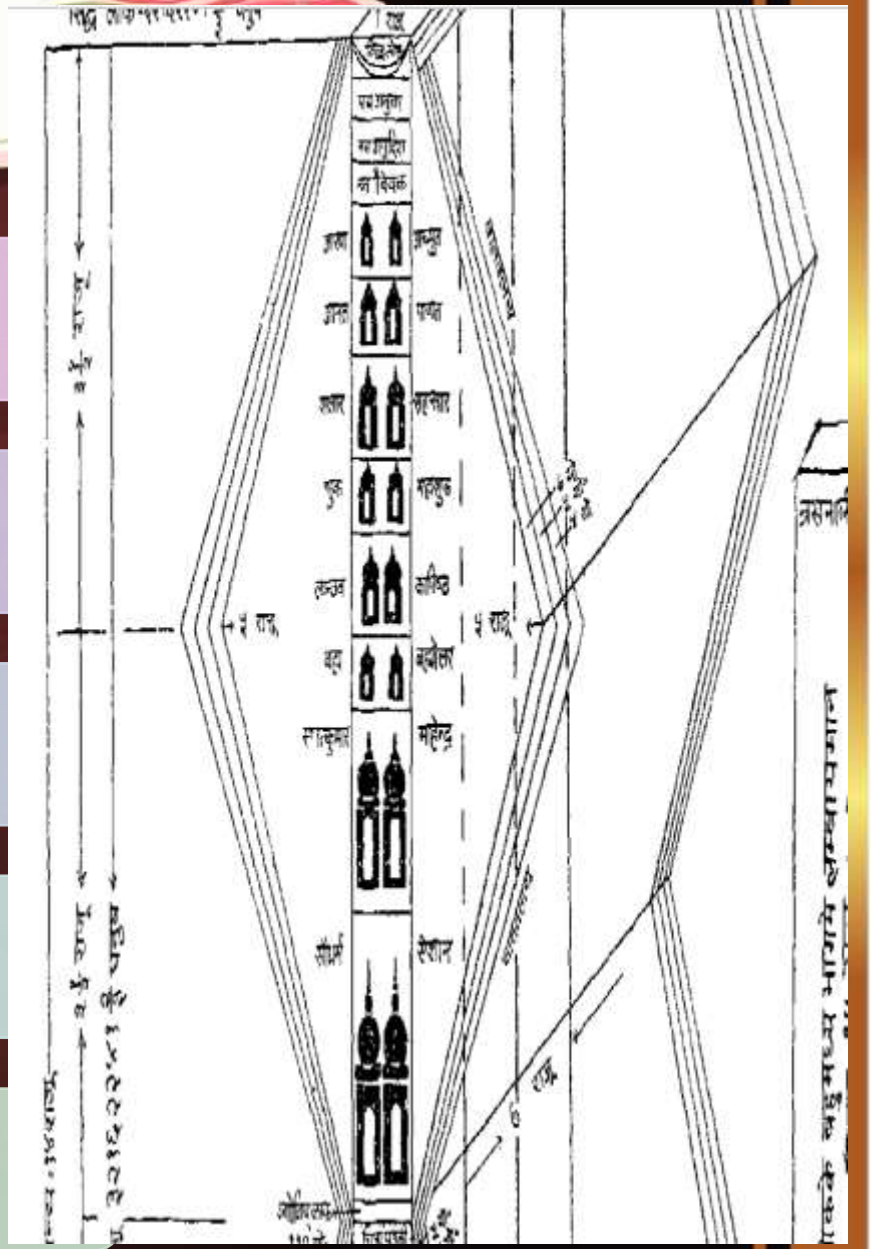

www.JainKosh.org

निवास

वैमानिक देव

एकेन्द्रिय तिर्यञ्च

सिद्ध भगवान

www.JainKosh.org

देवाश्चतुर्णिकायाः ।।1।।

- देव चार निकाय (समूह) वाले हैं ।।1।।

www.JainKosh.org

देव

भवनवासी

भवनों में निवास करते हैं

व्यन्तर

नाना प्रकार के देशों में निवास करते हैं

ज्योतिषी

जो ज्योतिर्मय विमानों में निवास करते हैं

वैमानिक

जो विमानों में निवास करते हैं

www.JainKosh.org

भवनवासी देव - निवास

अधोलोक

- असुरकुमार
  - रत्नप्रभा पृथ्वी के पंक भाग में
- शेष 9 प्रकार के
  - रत्नप्रभा पृथ्वी के खर भाग में

मध्यलोक

- असुरकुमार
  - भवनों में
- शेष 9 प्रकार के
  - भवन, भवनपुर और आवासों में

www.JainKosh.org

इनके निवास स्थान 3 प्रकार के होते हैं:

भवन	• रत्नप्रभा पृथ्वी में भवन हैं ।
भवनपुर	• द्वीप समुद्रों के ऊपर भवनपुर हैं ।
आवास	• रमणीय तालाब, पर्वत तथा वृक्षादि पर आवास हैं ।

www.JainKosh.org

व्यंतर देव - निवास

अधोलोक

- राक्षस
  - रत्नप्रभा पृथ्वी के पंक भाग में
- शेष 7 प्रकार के
  - रत्नप्रभा पृथ्वी के खर भाग में

मध्यलोक

- भवन, भवनपुर और आवासों में
- चित्रा पृथ्वी पर द्वीप, पर्वत, समुद्र, देश आदि में

www.JainKosh.org

ज्योतिषी देव - निवास

चित्रा पृथ्वी से 790 यो ऊपर से 900 यो तक हैं

तिर्यक् रूप से घनोदधि वातवलय तक

www.JainKosh.org

विमानवासी देव - निवास

ऊर्ध्व लोक

सौधर्म स्वर्ग के प्रथम पटल के विमान से प्रारम्भ कर सर्वार्थसिद्धि विमान तक

www.JainKosh.org

आदितस्त्रिषु पीतान्तलेश्याः ।।2।।

- आदि के तीन निकायों में पीत पर्यन्त लेश्याए हैं ।।2।।

www.JainKosh.org

भवनवासी, व्यंतर, ज्योतिषी देवों की लेश्याएँ

द्रव्य लेश्या

6 प्रकार की

भाव लेश्या

अपर्याप्त अवस्था

- कृष्ण
- नील
- कापोत

पर्याप्त अवस्था

- जघन्य पीत

दशाष्टपञ्चद्वादशविकल्पाः कल्पोपपन्नपर्यन्ताः ।।3।।

- वे कल्पोपपन्न देव तक के चार निकाय के देव क्रम से दस, आठ, पाच और बारह भेद वाले हैं ।।3।।

www.JainKosh.org

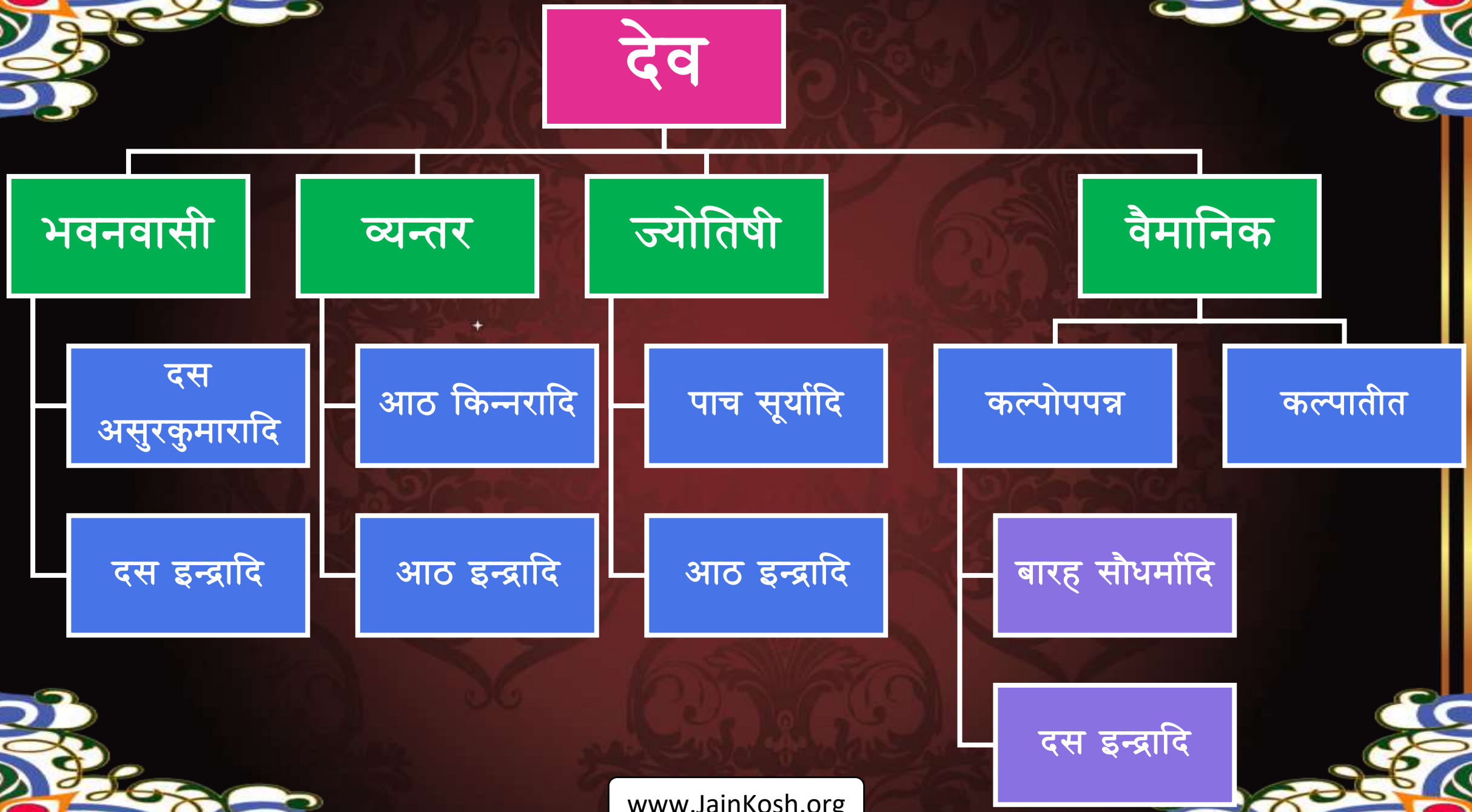

www.JainKosh.org

कल्पोपपन्न

इन्द्र, सामानिक आदि भेद सहित होना

कल्पातीत

इन्द्रादि भेद नहीं होना, सभी अहमिन्द्र होते हैं

www.JainKosh.org

इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशपारिषदात्मरक्ष-लोकपालानीकप्रकीर्णकाभियोग्य-किल्विषिकाश्चैकशः ।।4।।

- उक्त दस आदि भेदों में से प्रत्येक इन्द्र, सामानिक, त्रायस्त्रिंश, पारिषद, आत्मरक्ष, लोकपाल, अनीक, प्रकीर्णक, आभियोग्य और किल्विषिक रूप हैं ।।4।।

www.JainKosh.org

10 सामान्य भेद

इन्द्र	• राजा
सामानिक	• पिता, गुरु, उपाध्याय
त्रायंस्त्रिंश	• मंत्री, पुरोहित
पारिषद	• सभा सदस्य
आत्मरक्ष	• अंगरक्षक
लोकपाल	• कोतवाल
अनीक	• 7 प्रकार की सेना
प्रकीर्णक	• नगरवासी
आभियोग्य	• हाथी – घोड़ा वाहन आदि
किल्विषिक	• चाण्डालादि

7 प्रकार की सेना

- हाथी
- घोडा
- बैल
- रथ
- नर्तकी
- गन्धर्व
- पदाति

त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्या व्यन्तरज्योतिष्काः ।।5।।

- किन्तु व्यन्तर और ज्योतिष्क देव त्रायस्त्रिंश और लोकपाल इन दो भेदों से रहित हैं ।।5।।

पूर्वयोर्द्वीन्द्राः ।।6।

- प्रथम निकायों में दो-दो इन्द्र हैं ।।6।।

www.JainKosh.org

व्यंतर और ज्योतिषी के 8 भेद

इन्द्र

सामानिक

पारिषद

आत्मरक्ष

अनीक

प्रकीर्णक

आभियोग्य

किल्विषिक

www.Jainkosh.org

100 इन्द्र कैसे ?

	भेद	इन्द्र	प्रतीन्द्र	कुल
भवनवासी	10	2	2	10×2×2 = 40
व्यंतर	8	2	2	8×2×2 = 32
ज्योतिषी		चद्रमा	सूर्य	2
वैमानिक	शुरु के 4 स्वर्ग में = 4 इन्द्र, 4 प्रतीन्द्र बीच के 8 स्वर्ग में = 4 इन्द्र, 4 प्रतीन्द्र अंत के 4 स्वर्ग में = 4 इन्द्र, 4 प्रतीन्द्र			12×2 = 24
मनुष्य		चक्रवर्ती		1
तिर्यंच		सिंह		1
कुल				100

कायप्रवीचारा आ ऐशानात् ।।7।।

- ऐशान तक के देव कायप्रवीचार अर्थात् शरीर से विषय-सुख भोगने वाले होते हैं ।।7।।

शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनः प्रवीचाराः ।।8।।

- शेषा, स्पर्श, रूप, शब्द और मन से विषय सुख भोगने वाले होते हैं ।।8।।

परेऽप्रवीचाराः ।।9।।

- बाकी सब देव विषय सुख से रहित होते हैं ।।9।।

www.JainKosh.org

काय प्रवीचार
(मैथुन सेवन को प्रवीचार कहते हैं)

स्वरूप

मनुष्य के समान संक्लेश पूर्वक शरीर के द्वारा

कौन कौन से स्वर्ग में?

- भवनवासी
- व्यंतर
- ज्योतिषी
- 1-2 स्वर्ग

www.JainKosh.org

स्पर्श प्रवीचार

स्वरूप	कौन से स्वर्ग में
शरीर के स्पर्श करने मात्र से	3 – 4 स्वर्ग

रूप प्रवीचार

स्वरूप	कौन से स्वर्ग में
सुन्दर श्रृंगार, आकार विलास चतुर, मनोज्ञ वेश रूप लावण्य के देखने मात्र से	5 – 8 स्वर्ग

www.jainkosh.org

शब्द प्रवीचार

स्वरूप

मधुर गीत, कोमल हास्य, कोमल वचन, आभूषणों की ध्वनि सुनने से

कौन से स्वर्ग में

9 – 10 – 11 – 12 स्वर्ग में

www.JainKosh.org

मन प्रवीचार

स्वरूप	कौन से स्वर्ग में
एक दूसरे का मन में संकल्प मात्र करने से	13 – 14 – 15 – 16 स्वर्ग में

प्रवीचार रहित

स्वरूप	कौन से स्वर्ग में
विषय वेदना का अभाव	कल्पातीत

www.JainKosh.org

भवनवासिनोऽसुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधि द्वीपदिक्कुमाराः ।।10।।

- भवनवासी देव दस प्रकार के हैं — असुरकुमार, नागकुमार, विद्युत्कुमार, सुपर्णकुमार, अग्निकुमार, वातकुमार, स्तनितकुमार, उदधिकुमार, द्वीपकुमार और दिक्कुमार ।।10।।

www.JainKosh.org

भवनवासी देव

बालकों/कुमार जैसी वेषभूषा, क्रीडा, रूप, व्यवहार आदि के कारण ये कुमार कहे जाते हैं |

संख्यात वर्ष की आयु वाल देव 1 समय में संख्यात योजन जा – आ सकता है और असंख्यात वर्ष की आयु वाला देव 1 समय में असंख्यात योजन जा और आ सकता है ।

भवनवासी देव

10000 वर्ष की आयु वाला देव अपनी शक्ति से 100 मनुष्यों को मारने अथावा पोसने में समर्थ होता है । 150 योजन प्रमाण लम्बे चौड़े क्षेत्र को अपनी बाहुओं से उखाड़ने में समर्थ होता है ।

1 पल्य की आयु वाला देव 6 खंडों को उखाड़ने तथा वहां रहने वाले मनुष्यों एवं तिर्यञ्चों को मारने अथवा पोसने में समर्थ होता है

भवनवासी देव

इनकी जघन्य आयु 10,000 वर्ष और उत्कृष्ट आयु 1 सागर होती है ।

श्वासोच्छवास का जघन्य अंतराल 7 श्वासोच्छवास प्रमाण और उत्कृष्ट 15 दिवस है ।

आहार का जघन्य अंतराल कुछ अधिक 5 दिन और उत्कृष्ट 1000 वर्ष है ।

भवनवासी देव

असुरकुमार	• प्रथम 3 नरक तक जाकर नारकियों को उनके पूर्वभाव सम्बन्धी वैर का स्मरण कराकर परस्पर लड़ाते हैं
नागकुमार	• पर्वत और चंदनादि वृक्षों पर और पाताल लोक में रहते हैं, असुर कुमार देवों से इनकी मत्सरता रहती हैं
अग्निकुमार	• ये सदैव जाज्वल्यमान होकर पाताल लोक में रहते हैं ।
वातकुमार	• वायुकुमार जाति के देव हैं जो तीर्थंकरों के दीक्षा कल्याणक में शीतल वायु प्रसार करते हैं ।
स्तनितकुमार	• तीर्थंकरों के समवशरण में गंधोदक की वर्षा करते हैं

व्यन्तराः किन्नरकिम्पुरुषमहोरगगंधर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः ।।11।।

- व्यन्तर देव आठ प्रकार के हैं — किन्नर, किम्पुरुष, महोरग, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, भूत और पिशाच ।।11।।

www.JainKosh.org

व्यंतर देव

इनकी उत्कृष्ट आयु 1 पल्य और जघन्य आयु 10 हजार वर्ष होती है

एक पल्य की आयु वाला व्यंतर देव छह खण्डों को उखाड़ने में समर्थ होता है

तीर्थंकरों के जन्म की सूचना देने के लिए इनके भवनों में स्वयमेव भेरियों की ध्वनि होने लगती है ।

इनका सर्वत्र गमनागमन रहता है ।

व्यंतर देवों की संख्या है = जगत्प्रतर/$(300)^2$ योजन

किन्नर	• गान में रति करने वाले, तीर्थंकरों के कल्याणक के गाते हैं ।
किंपुरुष	• प्राय: मैथुन में रूचि रखने वाले होते हैं ।
महोरग	• सर्पाकार विक्रिया करने में रूचि रखने वाले होते है।
गन्धर्व	• इन्द्रादिक के गायकों का काम करते हैं ।
यक्ष	• लोभ की मात्रा अधिक होती है, भांडागार में नियुक्त किये जाते हैं ।
राक्षस	• भीषण विक्रिया करना प्रिय होता है ।

www.JainKosh.org

ज्योतिष्काः सूर्य्याचन्द्रमसौ ग्रह-नक्षत्रप्रकीर्णकतारकाश्च ।।12।।

- ज्योतिषी देव 5 प्रकार के हैं — सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्र और प्रकीर्णक तारे ।।12।।

मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके ।।13।।

- ज्योतिषी देव मनुष्यलोक में मेरु की प्रदक्षिणा करते हैं और निरन्तर गतिशील हैं ।।13।।

www.JainKosh.org

तत्कृतः कालविभागः ।।14।।

- उन गमन करने वाले ज्योतिषियों के द्वारा किया हुआ काल विभाग है ।।14।।

बहिरवस्थिताः ।।15।।

- मनुष्य लोक के बाहर ज्योतिषी देव स्थिर रहते हैं ।।15।।

www.JainKosh.org

ज्योतिषी देव

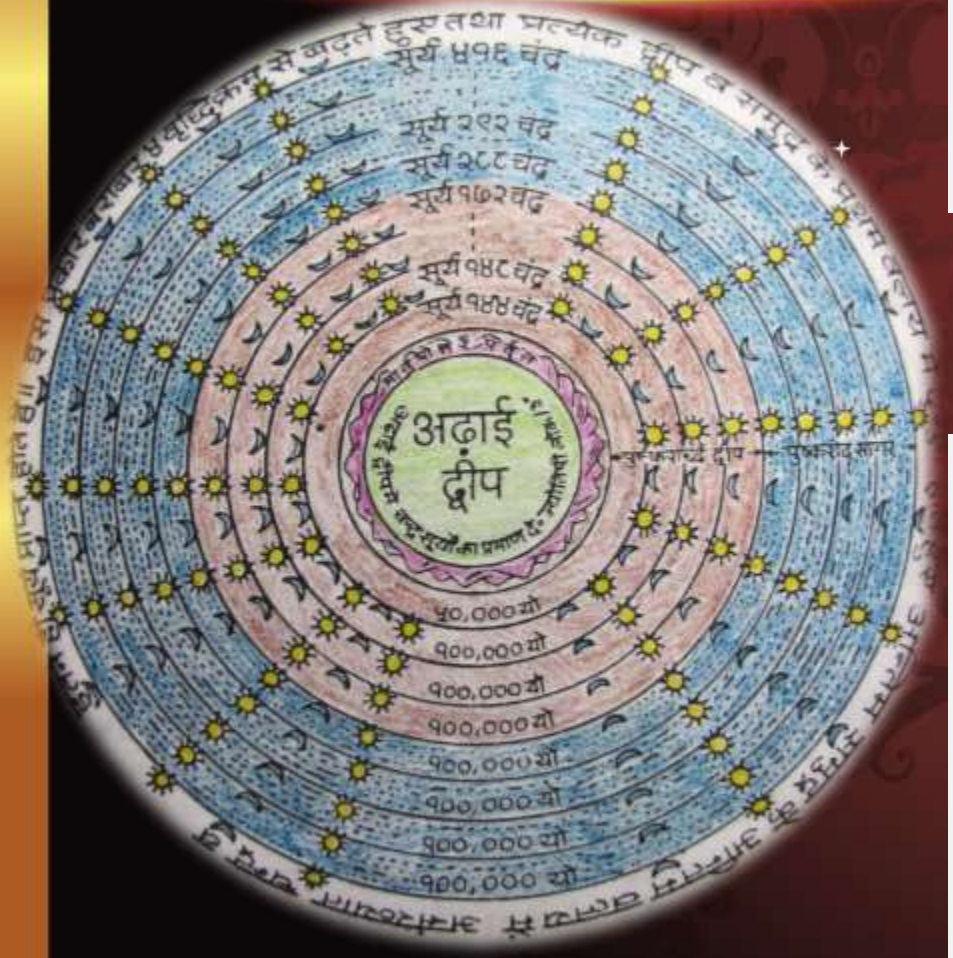

ढाई द्वीप में

- निरंतर गमनशील हैं
- मेरु की प्रदक्षिणा देते हैं
- व्यवहार काल विभाग के हेतु हैं

ढाई द्वीप से बाहर

- अवस्थित हैं

प्रत्येक चन्द्र का परिवार

चन्द्र	सूर्य	ग्रह	नक्षत्र	तारे
1	1	88	28	66975 कोड़ा-कोड़ी

चन्द्रमा और सूर्य

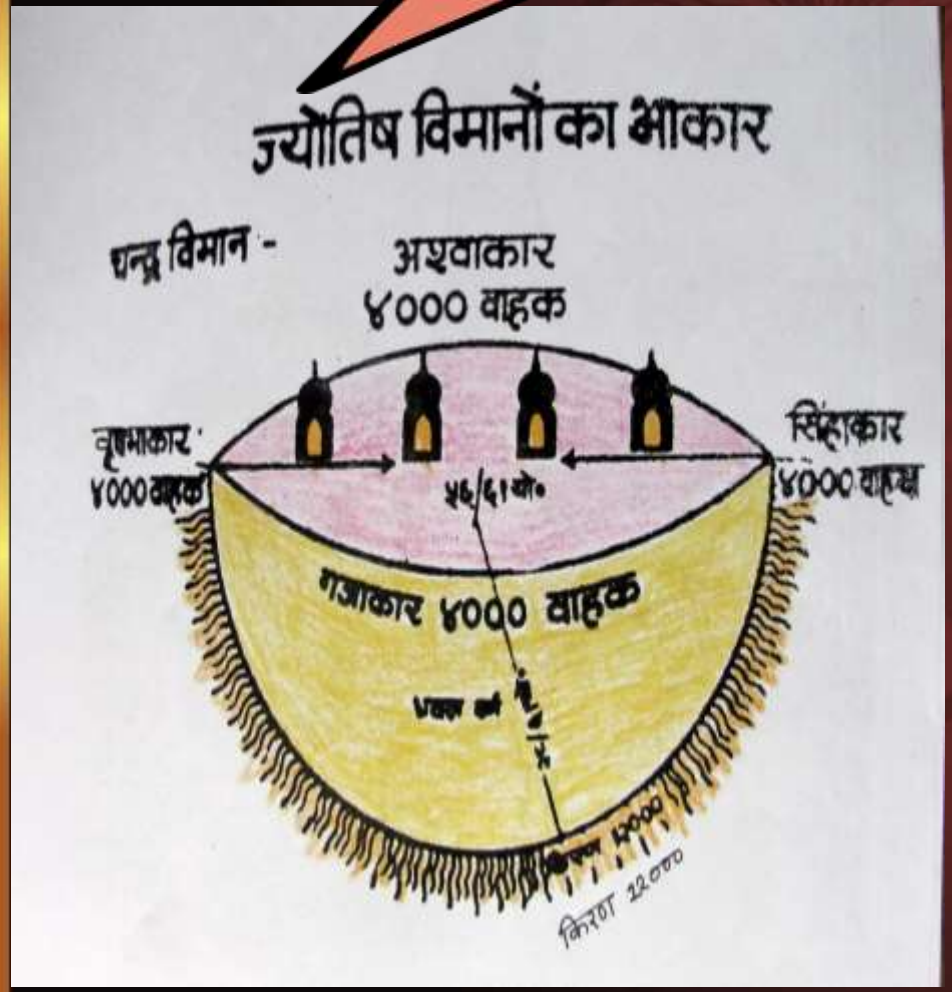

चन्द्रमा इन्द्र है और सूर्य प्रतीन्द्र है ।

अत: चन्द्रमा का परिवार 8 प्रकार का और सूर्य का परिवार 7 प्रकार का होता है ।

सूर्य और चन्द्रमा की पृथक-पृथक 12000 किरणें होती हैं ।

दोनों के विमानों के 16,000 आभियोग्य जाति के देव होते हैं जो प्रत्येक दिशा में 4-4 हजार रूप से होते हैं ।

ढाई द्वीप में कितने सूर्य चन्द्रमा हैं ?

	चद्रमा/सूर्य
जम्बूद्वीप	2/2
लवणसमुद्र	4/4
धातकीखण्ड	12/12
कालोदधि समुद्र	42/42
पुष्करार्ध्द द्वीप	72/72

	गति	वीथिया	कितने ऊपर जाकर	आभियोग्य देव
चद्रमा	सबसे मन्द	15	880	16,000
सूर्य	चन्द्र से तीव्र	184	800	16,000
ग्रह	सूर्य से तीव्र	8	888	8,000
नक्षत्र	ग्रह से तीव्र	एक ही पथ में गमन	884	4,000
तारे	सबसे तीव्र	एक ही पथ में गमन	790	5,00

विशेष

- सूर्य व चन्द्र प्रतिदिन आधी-आधी गली का अतिक्रमण करते हैं ।
- द्वीप व समुद्रों के अपने-अपने चन्द्रों में से आधे एक भाग में और आधे दूसरे भाग में पंक्ति क्रम से संचार करते हैं ।
- जम्बूद्वीप में 180 योजन और लवण समुद्र में 330 योजन चार क्षेत्र है जिसमें वे संचार करते हैं ।

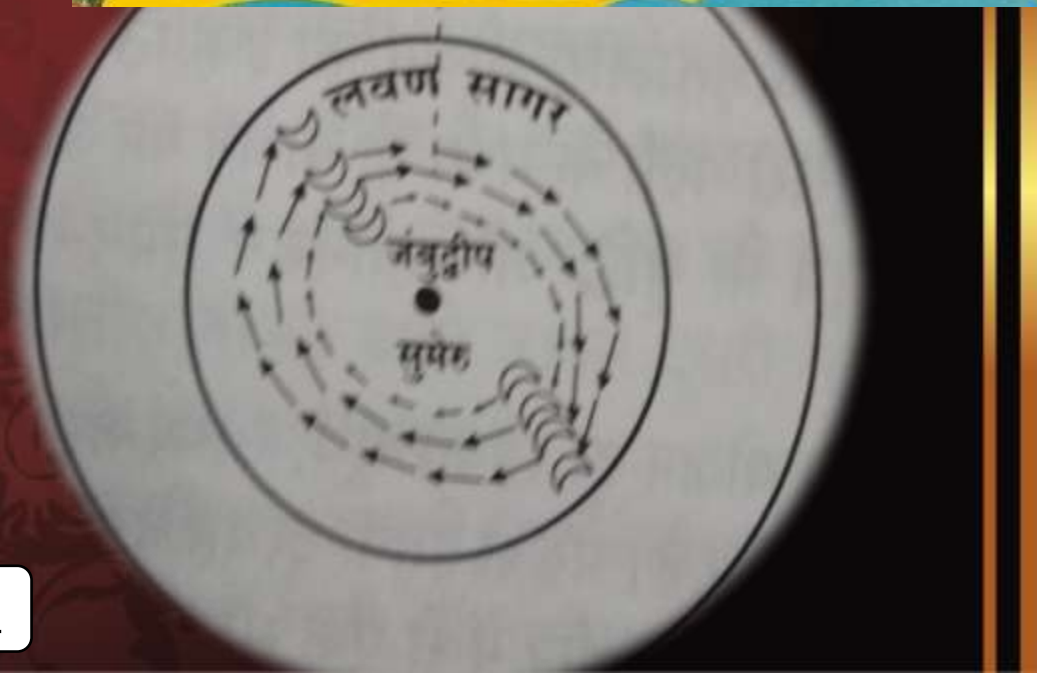

www.JainKosh.org

विशेष

- सूर्य और चन्द्र प्रथम वीथी में हाथी के समान, मध्यम में घोड़े के समान और अंतिम वीथी में सिंह के समान गमन करते हैं ।
- सूर्य श्रावण माह में सबसे अभ्यंतर वीथी में और माघ माह में सबसे बाह्य वीथी में रहता है ।
- सूर्य के अभ्यंतर वीथी में रहने पर दिन 18 मुहूर्त का और रात 12 मुहूर्त की होती है और बाह्य वीथी में रहने पर दिन 12 मुहूर्त और रात 18 मुहूर्त की हो जाती है ।

www.JainKosh.org

चद्रमा के घटने बढ़ने का कारण

- चद्रमा की 16 कलाये हैं, जिसमें एक-एक दिन में एक-एक भाग स्वयं कृष्ण रुप और उसके बाद स्वयं श्वेत रुप परिणमित हो जाता है ।
- अन्य आचार्य के अनुसार राहु चन्द्रमा के नीचे प्रतिदिन एक-एक भाग को आच्छादित करता है और बाद में एक-एक भाग को छोड़ता जाता है ।

ज्योतिषी देवों की संख्या

- जगत्प्रतर / (256 सूच्यंगुल)^2

चक्रवर्ती द्वारा सूर्य विमान में जिनबिम्ब दर्शन

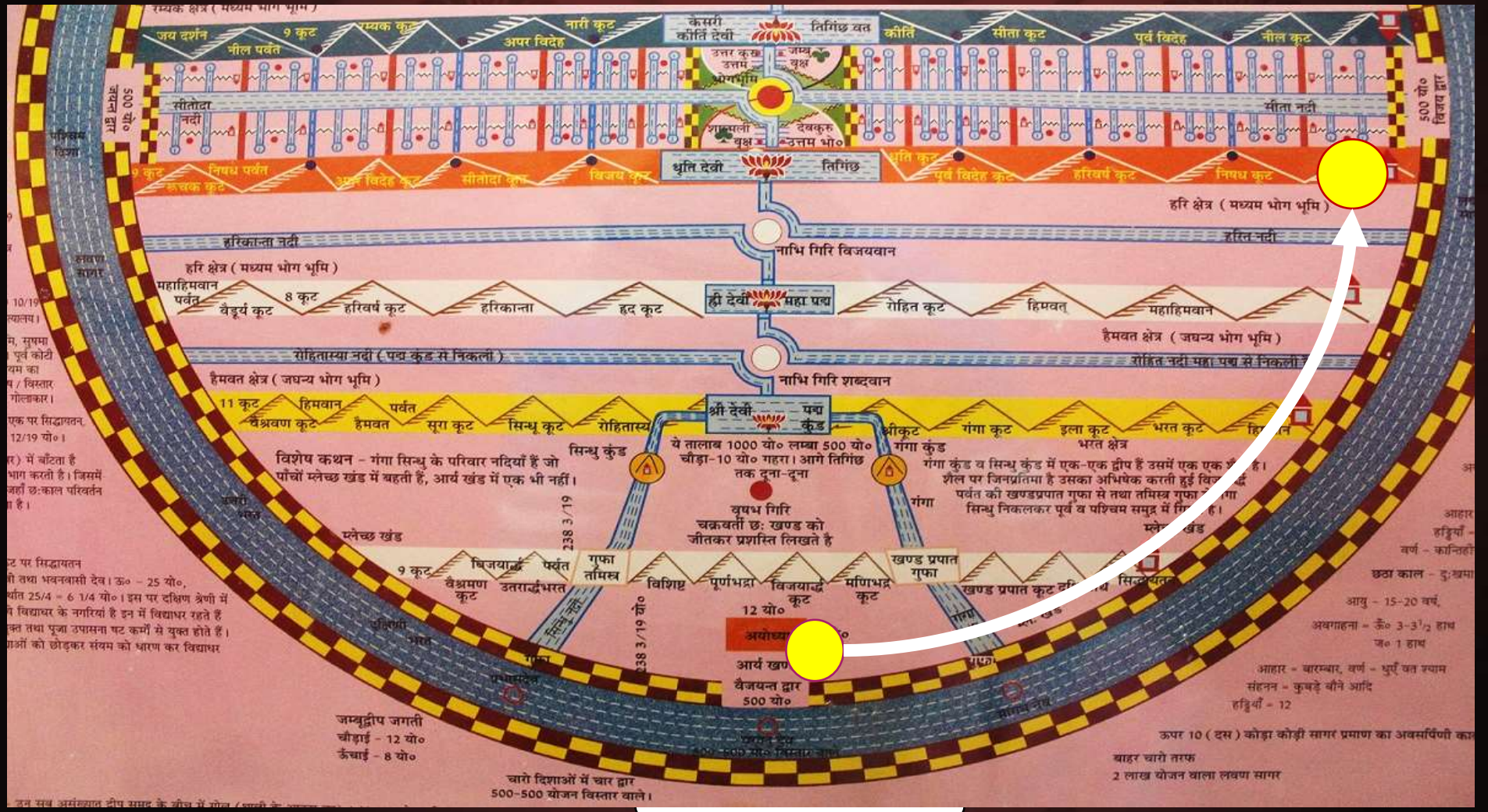

भवनत्रिक में उत्पत्ति का कारण

कुमार्ग में स्थित हैं ।

दूषित आचरण करने वाले हैं ।

सम्पत्ति में मुग्ध रहते हैं ।

बिना इच्छा के विषयों से विरक्त है ।

अकाम निर्जरा करने वाले हैं ।

अग्नि आदि द्वारा मरण को प्राप्त हुए हैं ।

जिन मलिन बुद्धि जीवों ने कषाय एवं इन्द्रियरूपी घोड़ों के आक्रमण को मन्द कर दिया है ।

वैमानिका: ।।16।।

- चौथे निकाय के देव वैमानिक हैं ।।16।।

कल्पोपपन्ना: कल्पातीताश्च ।।17।।

- वे दो प्रकार के है — कल्पोपपन्न और कल्पातीत ।।17।।

उपर्युपरि ।।18।।

- वे ऊपर-ऊपर रहते हैं ।।18।।

www.JainKosh.org

प्रकार

इन्द्रक	कतारबद्ध	प्रकीर्णक
बीच के	श्रेणीबद्ध	बिखरे हुए

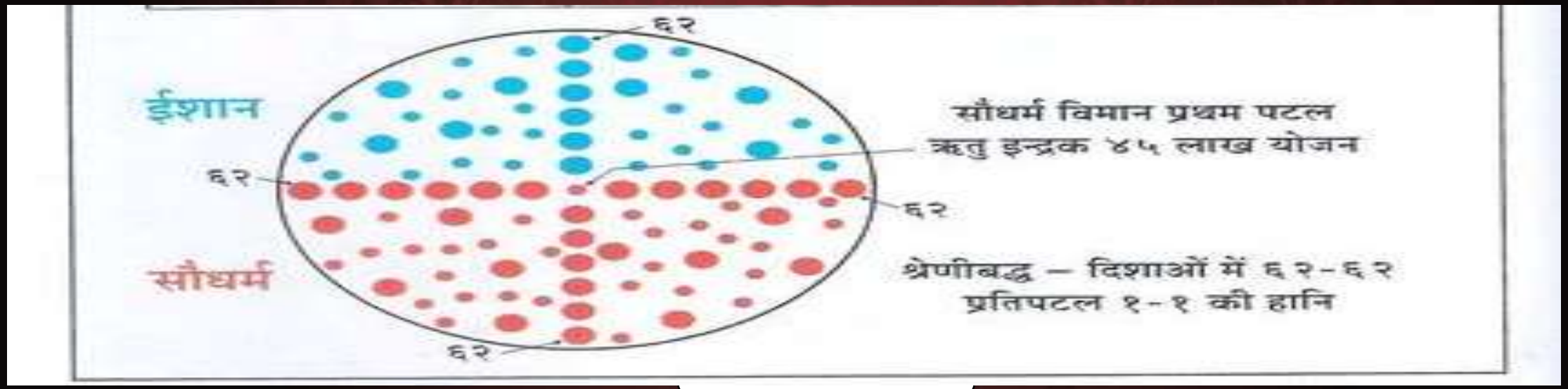

सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्र-ब्रह्मब्रह्मोत्तरलान्तवकापिष्ठ-शुक्रमहाशुक्रशतारसहस्त्रारेष्वानत-प्राणतयोरारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजय-वैजयन्त-जयन्तापराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च ।।19।।

- सौधर्म, ऐशान, सानत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर, लान्तव, कापिष्ठ, शुक्र, महाशुक्र, शतार और सहस्त्रार तथा आनत-प्राणत, आरण अच्युत, नौ ग्रैवेयक और विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित तथा सर्वार्थसिद्धि में वे निवास करते हैं ।।19।।

www.JainKosh.org

स्वर्ग	इन्द्र	ऊचाई	प्रस्तार
सौधर्म — ऐशान	सौधर्म, ऐशान	कुछ कम डेढ़ राजु	31
सानत्कुमार — माहेन्द्र	सानत्कुमार, माहेन्द्र	डेढ़ राजु	7
ब्रह्म — ब्रह्मोत्तर	ब्रह्म	कुछ कम आधा राजु	4
लान्तव — कापिष्ठ	लान्तव	आधा राजु	2
शुक्र — महाशुक्र	शुक्र	आधा राजु	1
शतार — सहस्त्रार	शतार	आधा राजु	1
आनत — प्राणत	आनत, प्राणत	आधा राजु	6
आरण — अच्युत	आरण, अच्युत	आधा राजु	
ग्रैवेयक	सभी इन्द्र	कुछ कम एक राजु	9
अनुदिश	सभी इन्द्र		1
अनुत्तर	सभी इन्द्र		1
टोटल	उत्तर दिशा के 18वें श्रेणीबद्ध विमान में 12	कुछ कम 7 राजु	63

	पटल	विमानों की संख्या
अनुत्तर	१	५
अनुदिश	१	९
ऊर्ध्व ग्रैवेयक	३	९१
मध्य ग्रैवेयक	३	१०७
अधो ग्रैवेयक	३	१११
आनतादि ४	६	७००
शतार युगल	१	६०००
शुक्र युगल	१	४००००
लान्तव युगल	२	५००००
ब्रम्ह युगल	४	४०००००
सानत्कुमार माहेन्द्र	७	१२००००० + ८०००००
सौधर्म ईशान	३१	३२००००० + २८०००००
कुल	६३	८४९७०२३

www.JainKosh.org

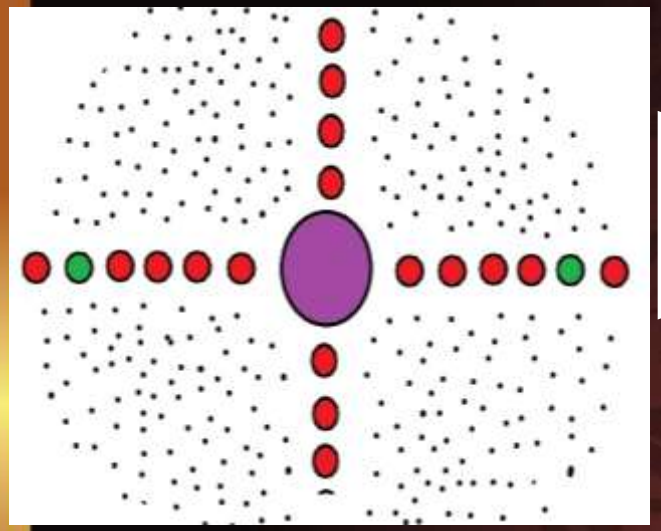

प्रत्येक पटल का structure

इंद्रक विमान

1-2 स्वर्ग =31 पटल

www.JainKosh.org

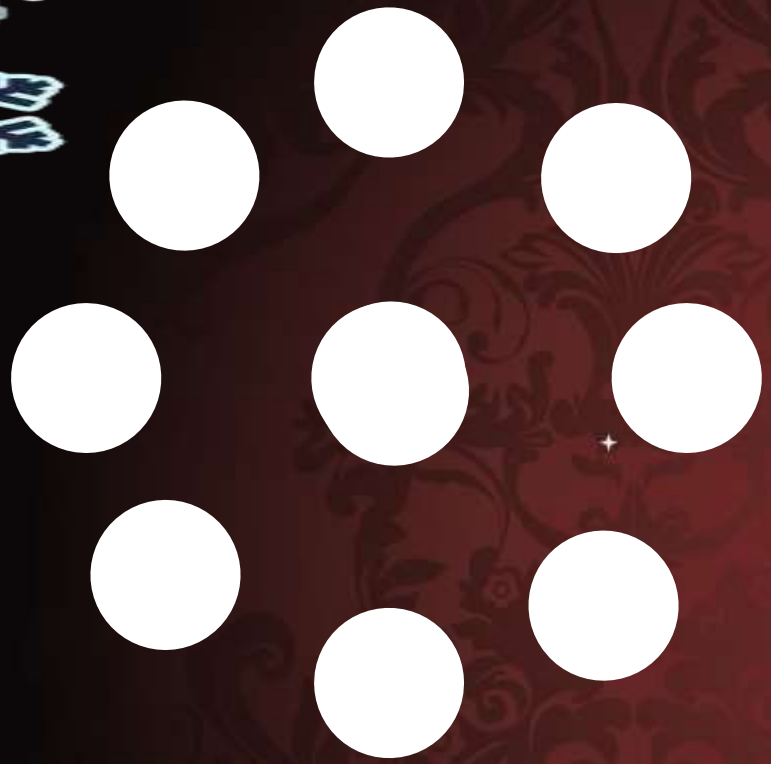

नौ अनुदिश

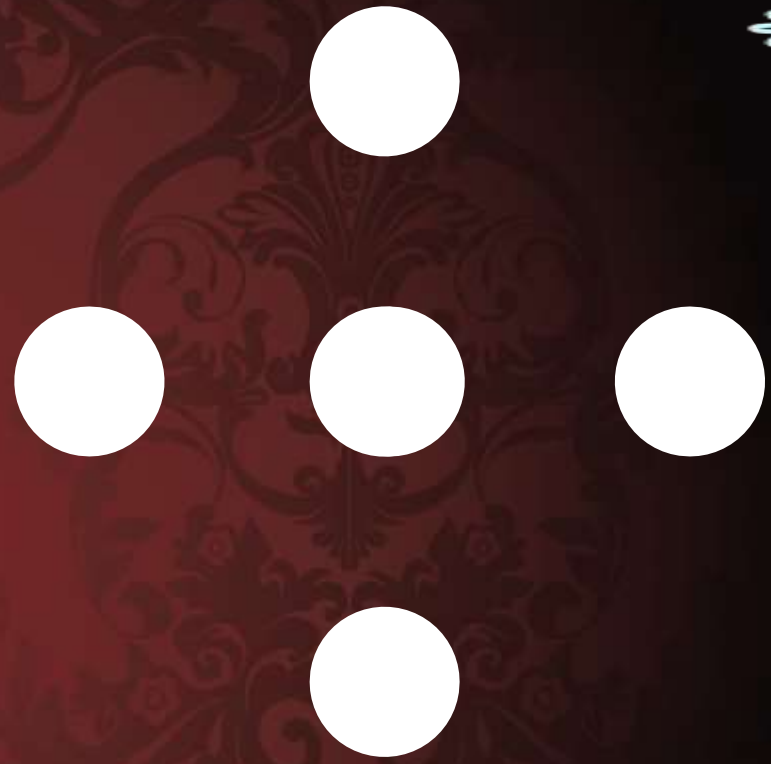

5 अनुत्तर

www.JainKosh.org

विशेष

- पहले-पहले के इन्द्र दक्षिणेन्द्र कहलाते हैं और बाद के उत्तरेन्द्र कहलाते हैं ।
- सौधर्म इन्द्र 31वें पटल में दक्षिण दिशा के 18वें श्रेणीबद्ध विमान में और ऐशान इन्द्र उत्तर दिशा के 18वें श्रेणीबद्ध विमान में रहता है ।
- सौधर्म और ऐशान स्वर्ग को छोड़कर शेष स्वर्गों में देवांगनाओं की उत्पत्ति नहीं होती है ।
- देवियों की आयु 55 पल्य से अधिक नहीं होती है ।

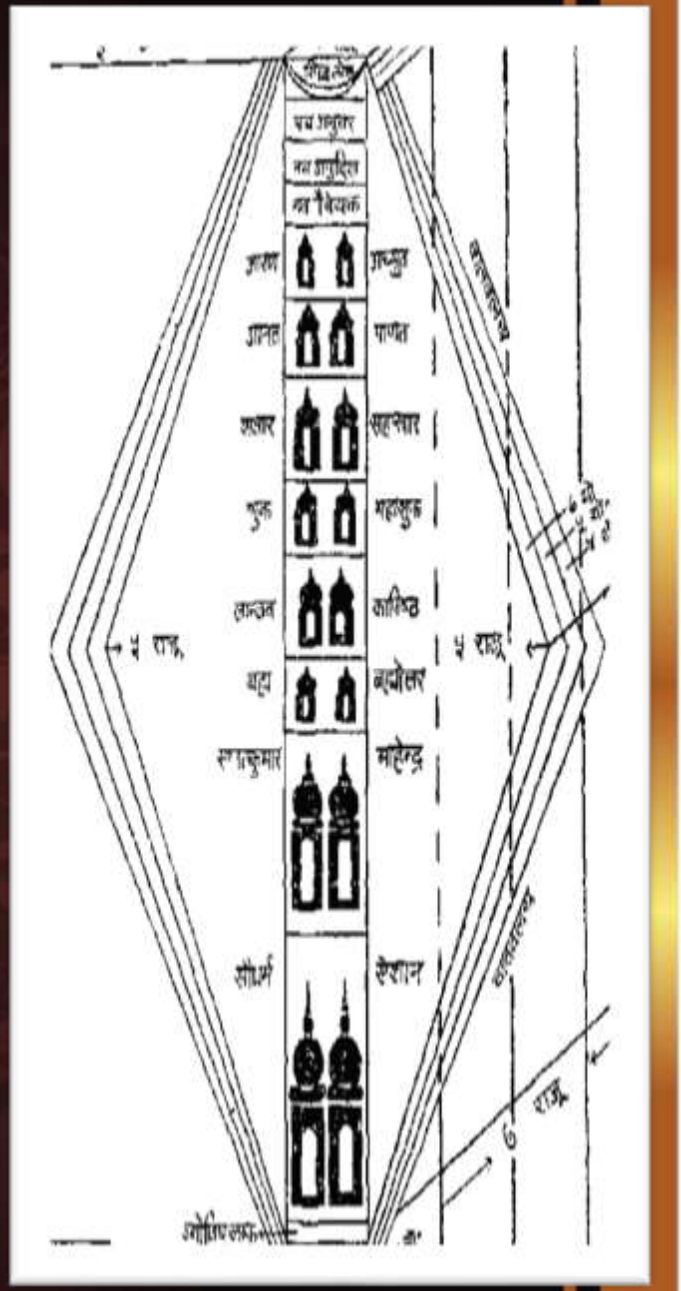

www.JainKosh.org

स्थितिप्रभावसुखद्युति-लेश्याविशुद्धीन्द्रियावधिविषयतोऽधिकाः ।।20।।

- स्थिति, प्रभाव, सुख, द्युति, लेश्याविशुद्धि, इन्द्रियविषय और अवधि विषय की अपेक्षा ऊपर-ऊपर के देव अधिक हैं ।।20।।

www.JainKosh.org

वैमानिक देवों में उत्तरोत्तर अधिकता

स्थिति	प्रभाव	सुख	द्युति	लेश्या	इन्द्रिय ज्ञान	अवधि ज्ञान
आयु	पर का भला-बुरा करने की शक्ति	इन्द्रिय विषयों की सामग्री	शरीर, वस्त्र आभूषण की चमक	भाव	इन्द्रिय विषयों का जानना	द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव से रूपी पदार्थों को जानना

गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतो हीनाः ।।21।।

- गति, शरीर, परिग्रह और अभिमान की अपेक्षा ऊपर-ऊपर के देव हीन हैं ।।21।।

www.JainKosh.org

वैमानिक देवों में उत्तरोत्तर हीनता

गति	शरीर	परिग्रह	अभिमान
गमन की इच्छा	ऊचाई	ममता का परिणाम	अहंकार

www.JainKosh.org

स्वर्ग	गमन (स्व से)	गमन (देव की सहायता से)	ऊँचाई (हाथ में)
1-2	3 ½ राजू (1½ + 2)	8 राजू (ऊपर 16 स्वर्ग तक और नीचे 3 नरक तक	7
3-4	5 राजू		6
5-6	5 ½ राजू		5
7-8	6 राजू		5
9-10	6 ½ राजू		4
11-12	7 राजू		4
13-14	5 ½ राजू	स्व पर मिलाकर 6 राजू	3.5
15-16	6 राजू		3
9 ग्रैवेयक	अपने विमान छोड़कर अन्यत्र गमन का अभाव		2.5, 2, 1.5
9 अनुदिश			1
5 अनुत्तर			1

www.JainKosh.org

पीतपद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु ।।22।।

- दो, तीन कल्पयुगमों में और शेष में क्रम से पीत, पद्म और शुक्ल लेश्या वाले देव हैं ।।22।।

www.JainKosh.org

वैमानिक देवों के लेश्या

स्वर्ग	लेश्या
1-2	मध्यम पीत
3-4	उत्कृष्ट पीत / जघन्य पद्म
5-6	मध्यम पद्म
7-8	मध्यम पद्म
9-10	उत्कृष्ट पद्म/ जघन्य शुक्ल
11-12	उत्कृष्ट पद्म/ जघन्य शुक्ल
13-14	मध्यम शुक्ल
15-16	मध्यम शुक्ल
9 ग्रैवेयक	मध्यम शुक्ल
9 अनुदिश	परम शुक्ल
5 अनुत्तर	परम शुक्ल

प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः ।।23।।

- ग्रैवेयकों से पहले तक कल्प हैं ।।23।।

www.JainKosh.org

ब्रह्मलोकालया लौकान्तिका: ।।24।।

- लौकान्तिक देवों का ब्रह्मलोक में निवास स्थान हैं ।।24।।

सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधारिष्टाश्च ।।25।।

- सारस्वत, आदित्य, वह्नि, अरुण, गर्दतोय, तुषित, अव्याबाध और अरिष्ट — ये लौकान्तिक देव हैं ।।25।।

www.JainKosh.org

लौकान्तिक देव

लोक + अन्त = संसार का अन्त निकट जिनका

लोक + अन्त = ब्रह्म स्वर्ग के अन्त में निवास जिनका

पाचवें ब्रह्म स्वर्ग के अन्त में, 8 दिशाओं में निवास है

इनकी कुल संख्या 4,07,820 हैं

www.JainKosh.org

विशेषता

- स्वतंत्र होते है ।
- परस्पर हीनाधिकता से रहित होते हैं ।
- ब्रह्मचारी होते हैं ।
- चौदह पूर्व के पाठी होते हैं ।
- सम्यग्दृष्टि होते हैं ।
- संसार से विरक्त होते हैं ।
- देवों में ऋषि हैं ।
- तीर्थंकरों के तप कल्याणक में ही आते हैं ।

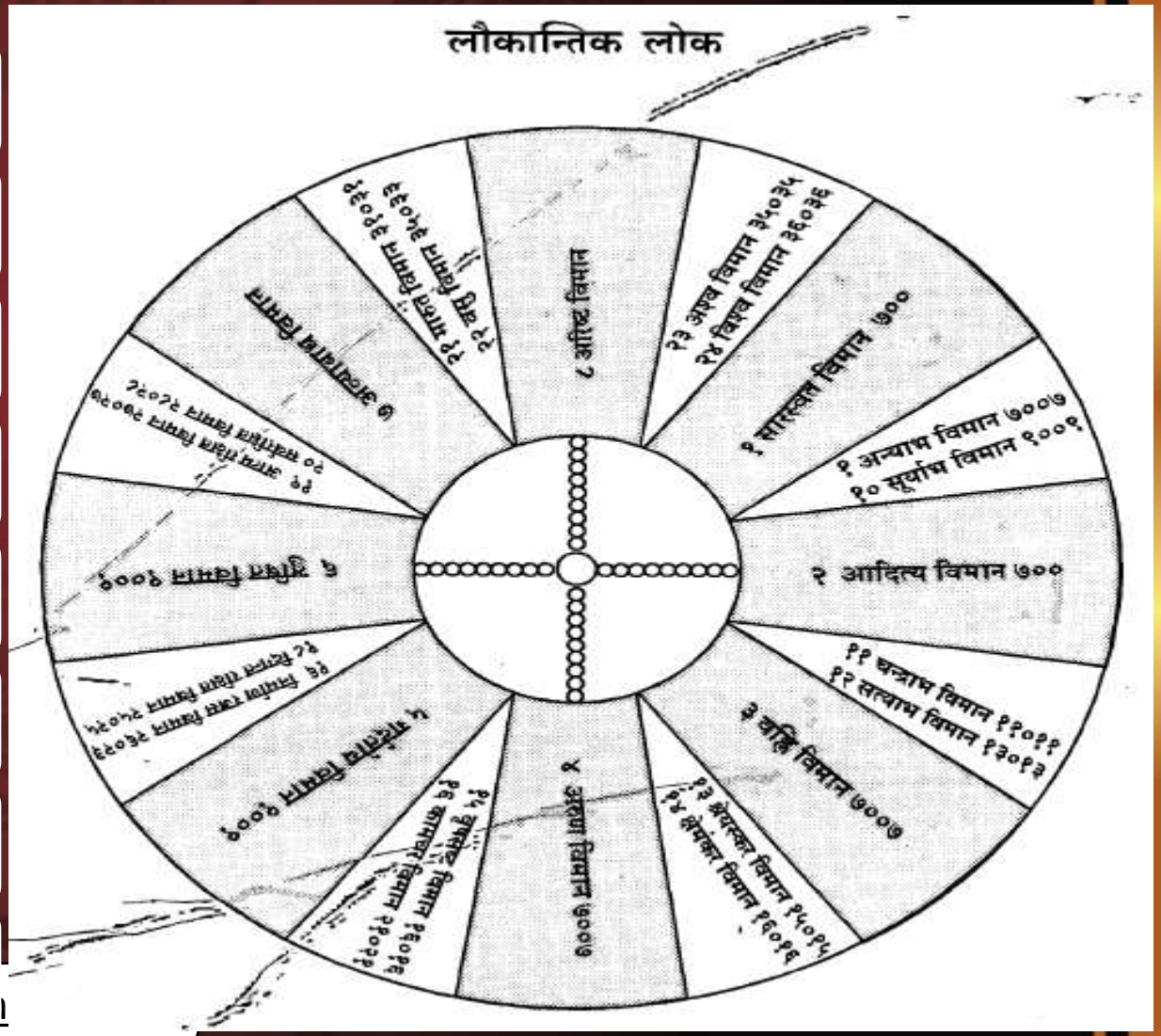

विजयादिषु द्विचरमाः ।।26।।

- विजयादिक में दो चरम वाले देव होते हैं ।।26।।

www.JainKosh.org

दो भवावतारी

9 अनुदिश के देव

4 अनुत्तर के देव

www.JainKosh.org

विशेष

द्विचरम में मनुष्य के 2 भव लेना है ।

2 भव में ही मोक्ष जाएंगे ऐसा नहीं, एक भव में भी जा सकते हैं परन्तु 2 से अधिक मनुष्य भव नहीं लगेंगे ।

www.JainKosh.org

एक भवावतारी

- सर्वार्थसिद्धि के सभी देव
- लौकान्तिक देव
- सर्व दक्षिणेन्द्र
- सौधर्म इन्द्र की शची इन्द्राणी
- सौधर्म इन्द्र के लोकपाल

www.JainKosh.org

औपपादिकमनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः ।।27।।

- उपपाद जन्म वाले और मनुष्यों के सिवा शेष सब जीव तिर्यंच योनि वाले हैं ।।27।।

www.JainKosh.org

कौन कहा तक जा सकता है ?

मनुष्य	उत्पत्ति स्वर्ग
1) भोगभूमिया- मिथ्यादृष्टि और सासादन गुणस्थानवर्ती	भवनत्रिक
सम्यग्दृष्टि	सौधर्म-ऐशान स्वर्ग (1-2)
2) कुभोगभूमिया- मिथ्यादृष्टि और सासादन गुणस्थानवर्ती	भवनत्रिक
सम्यग्दृष्टि	सौधर्म-ऐशान स्वर्ग (1-2)
3) कर्मभूमिया- मिथ्यादृष्टि और सासादन गुणस्थानवर्ती	भवनवासी से अच्युत स्वर्ग तक
सम्यग्दृष्टि व देशसंयमी	सौधर्म से अच्युत स्वर्ग तक
द्रव्य जिनलिंगी	ग्रैवेयक तक
सकल-संयमी-भावलिंगी मुनि	सौधर्म से सर्वार्थसिद्धि तक
अभव्य जिनलिंगी	ग्रैवेयक तक
परिवाज्रक तपस्वी	ब्रह्म स्वर्ग तक
आजीवक, कांजी आहारी, अन्य लिंगी	सहस्त्रार स्वर्ग तक

कौन देव मरकर कहा उत्पन्न होते हैं ?

भवनवासी से ऐशान तक	बादर पर्याप्त एकेन्द्रिय, 5 इन्द्रिय सैनी तिर्यञ्च व मनुष्य
सानत्कुमार से सहस्रार (3-12) तक	5 इन्द्रिय सैनी तिर्यञ्च व मनुष्य (एकेन्द्रिय नहीं होते)
आनत (13) स्वर्ग से ऊपर के	मनुष्य ही होते हैं (तिर्यञ्च नहीं होते)

सभी देव मरकर नरकों में, भोगभूमियों में, विकलत्रय, असैनी 5 इन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय, बादर अग्नि व वायु, सभी अपर्याप्तकों में उत्पन्न नहीं होते हैं ।

www.JainKosh.org

शलाका पुरुष संबंधी विशेषता

भवनत्रिक देव	63 शलाका पुरुष नहीं होते हैं ।
सौधर्म से ग्रैवेयक तक	63 शलाका पुरुषों में उत्पन्न हो सकते हैं ।
अनुदिश व अनुत्तर के देव	तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलभद्र तो हो सकते हैं, नारायण, प्रतिनारायण नहीं हो सकते हैं ।

www.JainKosh.org

स्थितिरसुरनागसुपर्णद्वीपशेषाणां सागरोपमत्रिपल्योपमार्द्धहीनमिताः ।।28।।

- असुरकुमार, नागकुमार, सुपर्णकुमार, द्वीपकुमार और शेष भवनवासियों के उत्कृष्ट स्थिति क्रम से एक सागरोपम, तीन पल्योपम, ढाई पल्योपम, दो पल्योपम, और डेढ़ पल्योपम होती हैं ।।28।।

www.JainKosh.org

उत्कृष्ट स्थिति

असुरकुमार	• एक सागरोपम
नागकुमार	• तीन पल्योपम
सुपर्णकुमार	• ढाई पल्योपम
द्वीपकुमार	• दो पल्योपम
शेष भवनवासियों	• डेढ़ पल्योपम

www.JainKosh.org

सौधर्मैशानयोः सागरोपमेऽधिके ।।29।।

- सौधर्म और ऐशान कल्प में दो सागरोपम से कुछ अधिक उत्कृष्ट स्थिति है ।।29।।

सानतकुमारमाहेन्द्रयोः सप्त ।।30।।

- सान्तकुमार और माहेन्द्र कल्प में सात सागरोपम से कुछ अधिक उत्कृष्ट स्थिति है ।।30।।

www.JainKosh.org

त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदशपञ्चदशभिरधिकानि तु ।।31।।

- ब्रह्मादि स्वर्गों की क्रम से तीन, सात, नौ, ग्यारह, तेरह, पन्द्रह, सागरोपम से साधिक उत्कृष्ट स्थिति है ।।31।।

आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च ।।32।।

- आरण-अच्युत के ऊपर के नौ ग्रैवेयक में से प्रत्येक में, नौ अनुदिश में, चार विजयादिक में एक-एक सागरोपम अधिक उत्कृष्ट स्थिति है तथा सर्वार्थसिद्धि में पूरी तैंतीस सागरोपम स्थिति है ।।32।।

www.JainKosh.org

अपरा पल्योपममधिकम् ।।33।।

- सौधर्म और ऐशान कल्प में जघन्य स्थिति साधिक एक पल्योपम है ।।33।।

परतः परतः पूर्वा पूर्वाऽनन्तरा ।।34।।

- आगे-आगे पूर्व की उत्कृष्ट स्थिति अनन्तर-अनन्तर की जघन्य स्थिति है ।।34।।

www.JainKosh.org

स्वर्ग	कुछ अधिक पल्य	उत्कृष्ट स्थिति
सौधर्म-ऐशान	पीछे-पीछे स्वर्ग की उत्कृष्ट आयु में एक समय अधिक करने पर आगे-आगे के स्वर्ग की जघन्य आयु होती है ।	2 सागर
सानत्कुमार-माहेन्द्र		7 सागर
ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर		10 सागर
लान्तव-कापिष्ठ		14 सागर
शुक्र-महाशुक्र		16 सागर
शतार-सहस्त्रार		18 सागर
आनत-प्राणत		20 सागर
आरण-अच्युत		22 सागर
ग्रैवेयक		23-31 सागर
अनुदिश		32 सागर
अनुत्तर		33 सागर

www.Jainkosh.org

विशेष

घातायुष्क - पहले ऊपर के स्वर्ग की आयु बाँधी पर बाद में आयु का घात किया तो नीचे के स्वर्ग की उत्कृष्ट आयु से अधिक स्थिति बन जाती है

12 वे स्वर्ग तक ही घातायुष्क स्थिति होती है, उसके ऊपर से स्वर्गों में नहीं

www.JainKosh.org

घातायुष्क सम्यग्दृष्टि

उत्कृष्ट आयु + ½ सागर में अंतर्मुहूर्त कम

घातायुष्क मिथ्यादृष्टि

उत्कृष्ट आयु + ½ सागर में पल्य/असंख्यात कम

www.JainKosh.org

नारकाणां च द्वितीयादिषु ।।35।।

- दूसरी आदि भूमियों में नरकों की पूर्व-पूर्व की उत्कृष्ट स्थिति ही अनन्तर-अनन्तर की जघन्य स्थिति है ।।35।।

दशवर्षसहस्राणि प्रथमायाम् ।।36।।

- प्रथम भूमि में दस हजार वर्ष जघन्य स्थिति है ।।36।।

भवनेषु च ।।37।।

- भवनवासियों में भी दस हजार वर्ष जघन्य स्थिति है ।।37।।

www.JainKosh.org

व्यन्तराणाम् ।।38।।

- व्यन्तरों की दस हजार वर्ष जघन्य स्थिति है ।।38।।

परा पल्योपममधिकम् ।।39।।

- और उत्कृष्ट स्थिति साधिक एक पल्योपम है ।।39।।

ज्योतिष्काणां च ।।40।।

- ज्योतिषियों की उत्कृष्ट स्थिति साधिक एक पल्योपम है ।।40।।

www.JainKosh.org

तदष्टभागोऽपरा ।।41।।

- ज्योतिषियों की जघन्य स्थिति उत्कृष्ट स्थिति का आठवा भाग है ।।41।।

लौकान्तिकानामष्टौसागरोपमाणि सर्वेषाम् ।।42।।

- सब लौकान्तिकों की स्थिति आठ सागरोपम है ।।42।।

www.JainKosh.org

स्वर्ग	जघन्य स्थिति	उत्कृष्ट स्थिति
भवनवासी	10 हजार वर्ष	1 सागर
व्यंतर	10 हजार वर्ष	1 पल्य
ज्योतिषी	पल्य/8	पल्य

www.JainKosh.org

देवों के नाम	आयु		देवांगना आयु	आहारेच्छा अंतराल
	जघन्य	उत्कृष्ट		
भवनवासी				
असुरकुमार	10 हजार वर्ष	1 सागर	3 पल्य	1000 वर्ष
नागकुमार	10 हजार वर्ष	3 पल्य	पल्य/8	$12^1/2$ दिन
सुपर्णकुमार	10 हजार वर्ष	$2^1/2$ पल्य	3 पूर्व कोटी	$12^1/2$ दिन
द्वीपकुमार	10 हजार वर्ष	2 पल्य	3 करोड़ वर्ष	$12^1/2$ दिन
शेष 6 प्रकार	10 हजार वर्ष	$1^1/2$ पल्य	3 करोड़ वर्ष	प्रथम 3 प्रकार 12 दिन, शेष 3 प्रकार 7½ दिन
व्यंतर	10 हजार वर्ष	1 पल्य	पल्य/2	कुछ अधिक 5 दिन
ज्योतिषी	पल्य /8	1 पल्य	सभी ज्योतिषी देवांगनाओं की अपने देवों की आयु के आधे प्रमाण	
चन्द्र		पल्य + 1 वर्ष		
सूर्य	पल्य/4	पल्य + 1000 वर्ष		
ग्रह		पल्य + 100 वर्ष		
नक्षत्र	पल्य/8	पल्य/2		
तारे		पल्य/4		

- Presentation Developed by: Smt Sarika Vikas Chhabra
- Refrence – Triloksaarji, Jainkosh, Tattwart Manjusha, Tattwarth Sutra in charts and tables
- For Feedback , suggestion – sarikam.j@gmail.com,
- Phone – 9406682889
- www.Jainkosh.org